वेदों की खुशबू

ओ३म्

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 63	Year 6	Volume 11	August 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

ईश्वर से प्यार करें, न कि भयभीत हो

कोई अगर आप को कहे कि आपके बच्चे आप से डरते हैं तो आप को कैसा लगेगा? मेरे ख्याल में आप दुखी ही होंगे। और अगर कोई कहे कि आपके बच्चे आप से प्यार करते हैं तो आप खुश ही होंगे। ईश्वर भी हमारा पिता है। इसलिये यह कहना कि मैं ईश्वर से डर कर रहता हू । I am a God fearing person ठीक नहीं जान पड़ता। मेरे ख्याल में कहने का अभिप्राय होता है कि मैं ईश्वर के न्याय से डरता हुआ कोई बुरा काम करने से डरता हूं।

फिर भी भय और प्यार एक दूसरे से उलट हैं। मनुष्य उसको प्यार नहीं कर सकता जिससे वह डरता है और जिस से वह प्यार करता है उससे डरता नहीं है। एक व्यक्ति से मैं इस बारे में चर्चा कर रहा था तो वह बोला——डर ईश्वर से नहीं उस के क्रोद्ध से लगता है । यह तो ईश्वर का और भी अपमान है क्योंकि ईश्वर तो सच्चिदानन्द स्वरूप है और सब अवगुणों से उपर है तभी तो उसे भगवान कहा गया है जब कि क्रोद्ध तो बहुत बड़ा अवगुण है। भय वैसे भी एक नाकारात्मक गुण है न कि साकारात्मक जब कि प्यार एक साकारात्मक गुण है।

गुरूवर रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि मैं ईश्वर से इस लिये बहुत प्यार करता हूं क्योंकि वह उनको भी उतना ही प्यार करता है जो उसकी सत्ता को नहीं मानते। ईश्वर उनको भी जीवन के सब साधन वायु, जल, अग्नि, फल , फूल वनसपति वैसे ही दे रहा है जैसे कि वह उस की सत्ता को मानने वालों को दे रहा है।

जो व्यकित प्यार करता है वह खुलकर उस प्यार को जाहिर भी करता है । अक्सर हम सुनते है——प्यार

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
 # 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

किया तो डरना क्या ईश्वर भक्ति के गायन, भजन , पाठ , पूजा, हवन खुले वातावरण में किये जाते हैं और जो ईश्वर से डरते है वे उसे खु.श करने के लिये कई बार घिनोने कृत भी करते है जैसा कि प्राणियों की मन्दिरों में या पूजा स्थलों मे बलि देते है। एक बार मैं आसाम में घूमने गया था तो वहां मन्दिरों में बलि के प्रचनन को देख कर मैने एक पण्डित से पूछा कि यह बलि क्यों देते हो ———उसका जवाब था———मां के क्रोद्ध को शांत करने के लिये। मैं हैरान था कि उसे कैसे पता लग रहा था कि मां क्रोद्धित है। मुझे घूम फिर कर ऐसा लगता है कि इन पण्डितों ने अपने स्वार्थ के लिये सारे हिन्दु समाज का बेड़ा र्गक किया हुआ है और वह ईश्वर को भी नहीं छोडते।

मनुष्य चाहता है कि वह प्यार करे और उसे भी प्यार मिले , तो यही रिश्ता हम ईश्वर से भी रखें। पर ईश्वर एक कदम आगे है वह कहता है न केवल मझे ही प्यार करो पर मेंरे प्राणियों से भी प्यार करो। जब हम ऐसा करने में सफल हो जाते है तो ईश्वर से सच्चा प्यार करने में सफल हो जाते है।

यह भी सच्चाई है कि किसी भी चीज से तभी तक भय रहता है जब तक हम उसे जान नहीं लेते। उदाहरण के लिये हम अन्धेरे में जा रहें है और सामने सांप जैसी कोई चीज नजर आती है। स्वभाविक रूप में हम डर जाते है और वापिस भागने की सोचते है पर यदि पास में टोर्च हो और उस की रोशनी में पता लग जाये किवह तो एक रस्सी थी तो सब भय दूर हो जाता है। इसी तरह ईश्वर से भी तभी तक भय रहता है जब तक हम इश्वर को जान नहीं लेते और अब ईश्वर को जान लेते हैं तो सब भय दूर हो जाता है और सिर्फ ईख्वर के लिये प्यार रह जाता है।

जिन्होने ईश्वर को जाना उन्होने ईश्वर का विवरण ऐसे दिया

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वान्तरयामी व सर्वशक्तिमान, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्वीकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वश्वर, सर्ववयापक, सर्वानतर्यामी, अजर,अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृश्टिकर्ता है

ओइम है जीवन हमारा, ओइम प्राणाधार है,
ओइम है करता विधाता, ओइम पालनहार है।
ओइम है दुख का विनाशक, ओइम सर्वानन्द है।
ओइम है बल तेजधारी, ओइम करूणाकन्द है।
ओइम है पापनाशक ओइम न्यायकारी है।
ओइम है पूज्य हमारा ओइम का पूजन करे,
ओइम के पूजन से मन अपना शुद्ध करें

ऐसे ईश्वर से केवल प्यार हो सकता है, भय नहीं ।इसलिये हमें ईश्वर से प्यार करना है न कि डरना है।

प्यार और विश्वास एक दूसरे के पूरक हैं इस लिये जब हम ईश्वर से प्यार करते हैं तो उस पर पूरा भरोसा भी करें। यही ईश्वर से प्यार है

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

अच्छे कर्म ही क्यों

डा महेश विद्यालकांर

किसी गुरू के दो शिष्य थे। एक ने गुरू से प्रश्न पूछा—" क्या आप पिछले जीवन के बारे में बता सकते हैं?" गुरू ने कहा—" हां, बता सकता हूं।"

तभी दूसरे शिष्य ने पूछा —" क्या आप अगले जीवन के बारे में बता सकते हैं?" गुरू ने कहा—" हां, मैं अगले जन्म के बारे में भी बता सकता हूं ।" उन्होने दोनो शिष्यों को समझाया—" देखो, पिछले जीवन के आधार पर तो यह जीवन मिला है। यदि पिछले जीवन मे धर्म व पुण्य न किये होते, तो वर्तमान जीवन इतना सुखी सुन्दर व सब साधनों से सम्पन कैसे मिलता? इससे सिद्ध है कि पिछला जीवन सुन्दर श्रेष्ठ व पवित्र था।

इसी तरह वर्तमान जीवन, बुराइयों, दोषों, पाप, अधर्म से बचा हुआ है, तो निश्चित है कि अगले जीवन में अच्छी योनि प्राप्त होगी। और तुम जानते हो कि सब से उतम योनी मनुष्य योनी ही है। इस लिये अगर मैं बुराइयों, दोषों, पाप, अधर्म से बचा रहता हूं, तो मेरा सोचना है कि अगले जीवन में मैं मनुष्य योनी को ही प्राप्त हूंगा

रूथ कथेरीना मरथा जिसे की उसकी सेवा की भावना के कारण पाकिस्तान की मदर टेरेसा कहा गया को मृत्यु उपरान्त राष्ट्रीय सम्मान के साथ दफनाया गया हालांकि वह ईसाई थी। यें है अच्छे कर्म अच्छे कार्य की प्रशंसा हर जगह होती है

असंख्य जीव नाना योनियों में जो कर्मफल भोग रहे हैं, वह पुनर्जन्म का सबसे बड़ा प्रमाण है। पुनर्जन्म के कर्मफल के कारण असख्य जीव नरक भोग रहे हैं। धर्म–कम, दान– पुण्य, पूजापाठ आदि वर्तमान व अगले जन्म को सुधारने के लिये किये जाते हैं। पुनर्जन्म की भावना पर विश्वास करते हुए हमे वर्तमान जीवन को सँभालना, सुधारना और उंचा उठाना चाहिये। इसी में जीवन की सार्थकता और उपयोगिता है। जो प्राप्त जीवन को दुर्गणो, दुर्व्यसनो तथा गल्त कामों मे गुजारते हैं, वे अगले जन्मो में निकृष्ठ योनियों को प्राप्त करके जन्म जन्मांतरों तक दुखः, कष्ट, अभाव आदि में रहते है। अतः यह जन्म हमे अगले जीवन को सँभालने, सुधारने का अवसर देता है। अतः मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने हर कर्म की जांच करता हुआ जीवन यापन करें। कोई भी ऐसा कर्म करने से दूर रहे जिस में पाप का संशय हो। दूसरों के काम आना, खास कर जो हमारे जैसे भाग्यशाली नहीं हैं, निस्वार्थ सेवा में लगे रहना सब से बड़ा पुण्य है।

श्रेष्ठकर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवदर्शन है। ' कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेत' हे मनुष्यो ! पुरषार्थी और कर्मशील बनो। कर्मो से मनुष्य देवता बनता है, कर्मो से ही मनुष्य राक्षस बन जाता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है वैसा काटता है। जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव कर्मानुसार जगत में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता है और अकेला ही चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति, आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

जो संसार में नानात्व तथा वैविध्य नजर आता है, उसके मूल में जीव के कर्म ही है। एक समय में दो बालक जन्म लेते है— एक राजमहल में दूसरा झोपड़ी में। कोई बुद्विमान है तो कोई बुद्विहीन। कोई साधनहीन है तो कोई सभी साधनो से सम्पन। कोई जन्म से ही सुखी है तो कोई जन्म से दुखः, कष्ट व पीड़ा उठा रहर है। सूरदास की यह पंक्तियां बहुत शिक्षाप्रद हैं–

उधो! क्रमन की गति न्यारी।
कर्म गति टारे नहीं टरे ।।

ससांर में अन्नत भोग योनियों का जाल बिछा है। नाली में पड़ा हुआ कीड़ा पूर्वजन्म के कर्मफल भोग रहा है। संसार के प्राणी र्कमफल के भोग के प्ररक उदाहरण है। गीता कहती है—–' कर्मणा गहना गति" कर्मफल का रहस्य बड़ा गहन व विचित्र है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनी–ज्ञानी भी इस रहस्य को समझ नहीं सके है। भगवान श्री कृष्ण का अमर संदेश है—–' अवश्यमेव भेक्तव्ये कृत कर्म शुभाशुभम—जो कर्म मैने किये है या कर रहा हूं, उसका अच्छा बुरा फल मुझ को ही प्राप्त होगा। प्रभु की इस अटल न्याय–व्यवस्था में कोई पक्षपात तथा सिफारिश नहीं है। व्यक्ति अपने ही बुरे कर्मो से नरक भोगता है।

कोई किसी को स्वर्ग या नरक नहीं देता है। व्यक्ति उपने कर्म से ही उठता है तथा अपने कर्म से ही नीचे गिरता है। प्रभु की अदालत में कोई वकील, दलील या अपील नहीं चलती। उसकी मार में आवाज़ नहीं होती। प्रेरक कथन हमे सचेत कर रहा है,

कण– कण में बसा प्रभु देख रहा है।
चाहे पाप करो, चाहे पुण्य करो।।
कोई उसकी नज़र से बच न सका

इस लिये जिस तरह आज हम पानी वही पीना चाहते है जो कि फिलटर से निकला हो इसी तरह अपने कर्मो को भी आत्मा रूपी फिल्टर से छान कर ही करें। अर्थात जहां हमारी आत्मा यह आवाज देती है कि यह कार्य पाप है उसे न करें और जहां हमारी आत्मा की आवाज आती है कि इस काम को कर डालो उस में देर न करें। याद

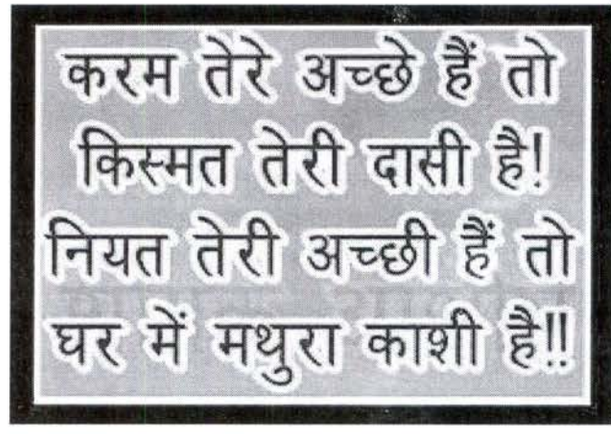

रखें अगर आप ईश्वर में विश्वास करते हैं और ईश्वर भक्ति में लीन है तो आपकी आत्मा अवश्य ही आपको अच्दे बुरे के बारे में सचेत करती रहती है।

*****

मूर्ती मे परमेश्वर के दर्शन

माता सुखदा सरना

कई मनुष्य परमेश्वर को भेंट चड़ाने की बात करते हैं, पर मेरा प्रश्न है ईश्वर को भेंट कैसे चढ़ायें और किस वस्तु की चढ़ायें, सब कुछ उस प्रभु का दिया हुआ तो है। कई सम्प्रदाय परमेश्वर की मूर्ति बनाकर उस पर पुष्प, फल मिष्ठान, सोना, चादीं व वस्त्र आदि की भेंट चड़ाते हैं। और कई तो उस के बनाये प्राणी को ही बली के रूप में भेंट देने का पाप कर देते है। अच्छा हो हम इस अज्ञान से दूर हो। हमारी भक्ति ही सच्ची भेंट है।

दूसरी बात जो निराकार है व जिसका शरीर ही नहीं, जो कण कण में समाया हुआ है उसकी मूर्ति कैसे बनाई जाये। जो ईश्वर वेदों के अनुसार ---सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वान्तरयामी व सर्वशक्तिमान, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्वीकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वश्वर, सर्ववयापक, सर्वानतर्यामी, अजर,अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसकी मूर्ती कैसे बनाई जा सकती है। जरा सोजिये अगर कोई आप के माता पिता का ऐसा चित्र बना दे जो कि उन के साथ मेल न खाता हो तो आपको कितना दुख होता है इसी तरह उस परमेश्वर को किसी भी रूप में दिखाना पाप है । कुम्हार अपने हाथों से मिटी के बर्तन बनाता है। जुलाहा अपने हाथों से कपड़ा बुनता है। इसी तरह मूर्तिकार उपने हाथो से उस मूर्ति को बनाता हैं जिसे कई सम्परदायों के लोग ईश्वर मानना शुरू कर देते हैं। जिसे किसी मनुष्य ने ही बनाया है उसे ईश्वर कैसे माना जा सकता है। तो कयूं न उस सर्वान्तरयामी प्रभु को जो कि कण कण मे विराजमान है व हमारे अन्दर भी है कि मन मे ही ध्यान कर पूजा करें? ऐसा करने से उस के हर समय दर्शन हो सकते हैं। जब यह मान लिया कि ईश्वर निराकार, अजन्मा व अनन्त है तो उसे किसी खास स्थान व पदार्थ मे ही मानकर पूजा करना क्या गल्त नहीं होगां।

आइये उस सर्वान्तरयामी प्रभु को जो कि कण कण मे विराजमान है व हमारे अन्दर भी है को मन मे ही ध्यान कर पूजा करे। अपने हृदय में उसे स्थान देकर उस की पूजा करें। उसके लिये तो हमारी भक्ति ही सच्ची भेंट है व परोपकार, सत्य और प्रेम ही सच्ची पूजा है।

कितना सुन्दर कहा है--तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलिशानं

यदि आप आर्य समाजी है तो इस बात का प्रचार करना आपका परम धर्म है। यही तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में कहा है---अविद्या का नाश और विद्या की बृद्धि सब आर्य समाजियों का परम धर्म है। सिर्फ हवन कर लेने से आर्य समाजी नहीं बन जाते।

*****

श्री कृष्ण का पवित्र और महान जीवन चरित

कृष्ण चन्द्र गर्ग

श्री कृष्ण महाभारत के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पात्र थे। महाभारत का युद्ध द्वापर युग के अन्त में अब से लगभग 5200 वर्ष पूर्व हुआ। श्री कृष्ण के जीवन चरित का प्रमाणिक स्रोत महाभारत की पुस्तक ही है। महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण का जीवन बड़ा पवित्र और महान था। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो - ऐसा नहीं लिखा।

महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण की एक पत्नी थी - रुक्मिणी। विवाह के बाद श्री कृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ 12 वर्ष तक हिमालय पर्वत पर रहकर ब्रह्मचर्य का पालन किया। उसके पश्चात उनके यहां एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम प्रद्युम्न रखा गया। प्रद्युम्न बड़ा होकर हू बहू अपने पिता श्री कृष्ण जैसा ही दिखता था।

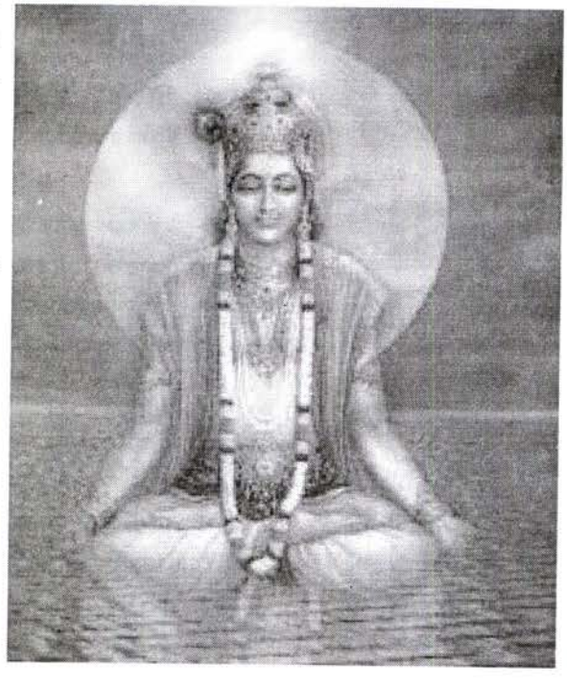

महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई ज़िकर नहीं है।

राजसूय यज्ञ (महाभारत के युद्ध के पहले की अवस्था है) - पाण्डवों के राज्य का तेज सभी जगह पहुँच चुका था। प्रजा सुखी थी। सभी राजे-महाराजे उनका सिक्का मानते थे। तब युधिष्ठिर ने महाराजाधिराज (चक्रवर्ती सम्राट) की उपाधि पाने के लिए राजसूय यज्ञ की ठानी। इसके सम्बन्ध में उसने अपने मन्त्रियों और भाईयों को बुलाकर पूछा - क्या मैं राजसूय यज्ञ कर सकता हूँ? सबने जवाब दिया - हां, अवश्य कर सकते हैं, आप इसके योग्य पात्र हैं। व्यास आदि ऋषियों से यही प्रश्न किया। उन सबने भी हां में ही उत्तर दिया। परन्तु युधिष्ठिर को श्री कृष्ण से सम्मति लिए बिना तसल्ली न हुई। उन्होंने श्री कृष्ण से कहा - हे कृष्ण! कोई तो मित्रता के कारण मेरे दोष नहीं बताता, कोई स्वार्थवश मीठी-मीठी बातें करता है। पृथ्वी पर ऐसे लोग ही अधिक हैं। उनकी सम्मति से कोई काम नहीं किया जा सकता। आप इन दोषों से रहित हैं। इसलिए आप ही मुझे ठीक-ठीक सलाह दें। तब श्री कृष्ण बोले - महान पराक्रमी जरासन्ध के जीते जी आपका राजसूय यज्ञ पूरा न होगा। उसको हराने के बाद ही यह महान कार्य सफल हो सकेगा।

जरासन्ध वध - जरासन्ध बड़े विशाल और वैभवशाली राज्य मगध का राजा था। वह बड़ा क्रूर और अत्याचारी था। उसने अपने यहां 86 राजाओं को बन्दी बना रखा था और यह ऐलान कर रखा था कि जब इनकी संख्या 100 हो जाएगी वह इन सबकी बलि चढ़ा देगा। यह अत्याचार श्री कृष्ण को सहन नहीं था। इसी कारण से वे उसे समाप्त करना चाहते थे। जरासन्ध का जन, धन, बल इतना अधिक था कि रणक्षेत्र में उसे हराना असम्भव था। श्री कृष्ण ने नीति से जरासन्ध का भीम से युद्ध करवा दिया जिसमें जरासन्ध मारा गया। तब श्री कृष्ण ने सभी बन्दी राजाओं को मुक्त कर दिया और जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगध का राजा बना दिया।

प्रथम अर्घ्य (पहला सम्मान) - राजसूय यज्ञ आरम्भ होने पर भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि उपस्थित राजाओं में जो सबसे श्रेष्ठ है उसे ही प्रथम अर्घ्य देना चाहिए। युधिष्ठिर ने भीष्म से ही पूछ लिया कि ऐसा व्यक्ति कौन है जो पहले अर्घ्य पाने का पात्र है। इस पर भीष्म ने कहा - जैसे चमकने वाले सभी तारों में सूर्य सबसे अधिक प्रकाशमान है वैसे ही इन सब राजाओं में श्री कृष्ण तेज, बल, पराक्रम में सबसे अधिक हैं। इसलिए वे ही प्रथम अर्घ्य पाने के योग्य हैं। तब युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर सहदेव ने श्री कृष्ण को प्रथम अर्घ्य दिया।

सन्धि का प्रस्ताव - पाण्डवों ने 12 वर्ष वन में बिताने के बाद 13वां वर्ष अज्ञातवास में बिताया। फिर कौरवों से अपना राज्य मांगा। जब कौरवों ने राज्य देने से इनकार कर दिया तब पाण्डवों ने युद्ध का निश्चय कर लिया। अन्तिम कोशिश के तौर पर श्री कृष्ण कौरवों के पास जाने को तैयार हुए। सबने उनको रोका कि कौरव मानने वाले नहीं हैं। तब श्री कृष्ण ने कहा कि संसार में कार्य सिद्धि के दो आधार होते हैं - एक मनुष्य का पुरुषार्थ, दूसरा ईश्वर इच्छा। मैं पुरुषार्थ तो कर सकता हूँ, ईश्वर इच्छा मेरे अधीन नहीं है। इसलिए फल मैं नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि मुझे शक्तिभर प्रयास कर लेना चाहिए।

हस्तीनापुर पहुँचने पर महात्मा विदुर ने श्री कृष्ण से कहा कि दुर्योधन मानने वाला नहीं है। अतः आप सन्धि का प्रयत्न छोड़ दें। तब श्री कृष्ण ने कहा - सारी पृथ्वी खून से लथपथ होती देख रहा नहीं जाता। और यह भी कहा - आपत्ति में पड़े अपने व्यक्ति को बालों से पकड़कर भी खींचने का यत्न करे फिर मनुष्य निन्दा का पात्र नहीं होता।

श्री कृष्ण ने सन्धि के लिए दुर्योधन, धृतराष्ट्र, कर्ण से बात की, उन्हें समझाने का प्रयास किया। परन्तु सफलता न मिली। इस दौरान दुर्योधन ने उन्हें अपने यहां भोजन करने के लिए कहा। तब श्री कृष्ण बोले - राजन्! किसी के घर का अन्न दो कारणों से खाया जाता है - या तो प्रेम के कारण या आपत्ति पड़ने पर। प्रीति तो तुम में नहीं है और संकट में हम नहीं हैं।

यजुर्वेद कर मन्त्र है -
यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।।

इस वेद मन्त्र में बताया गया है कि सुखी और उन्नत जीवन के लिए दो गुणों की आवश्यकता है - एक विद्वता और दूसरा बल। श्री कृष्ण में ये दोनों गुण विद्यमान थे। उनकी बुद्धिमता और नीति के कारण ही कम शक्ति के होते हुए भी महाभारत के युद्ध में पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की और शक्तिशाली, अत्याचारी राजा जरासन्ध को मार गिराया। श्री कृष्ण ने शारीरिक बल के सहारे ही अत्याचारी राजा कंस को यमलोक पहुँचा दिया और घमण्डी शिशुपाल का वध कर दिया।

गीता में श्री कृष्ण ने योग की परिभाषा ऐसे की है - योगः कर्मसु कौशलम्। अर्थात कार्य को कुशलता पूर्वक करना योग है। इस दृष्टि से श्री कृष्ण पूर्ण योगी थे क्योंकि उन्होंने जो भी काम किए उनमें अपनी बुद्धि बल और नीति से सफलता प्राप्त की।

महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन और कर्ण के बीच लड़ाई हो रही थी तब कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धंस गया और वह उसे निकालने के लिए रथ से नीचे उतरा। तब कर्ण ने अर्जुन को लड़ाई के धर्म की दुहाई दी और वह चिल्लाया कि निहत्थे पर वार करना धर्म नहीं है। इस पर श्री कृष्ण बोले - अरे कर्ण! अब धर्म-धर्म चिल्लाता है। परन्तु -

1. जिस समय तुम, दुशासन, शकुनि और सौबल सब मिलकर ऋतुमती द्रौपदी को घसीट लाए थे, उस समय तुम्हें धर्म की याद न आई।
2. जब तुम बहुत से महार्थियों ने मिलकर अकेले अभिमन्यु को घेरकर मार डाला था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था।
3. जब 13 वर्ष के बनवास के बाद पाण्डवों ने अपना राज्य मांगा और तुमने नहीं दिया, तब तुम्हारा धर्म कहां ग़या था।
4. जब तुम्हारी सम्मति से दुर्योधन ने भीम को विष खिलाकर नदी में डाल दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।
5. जब वारणावत नगर में लाख के घर में तुमने सोते हुए पाण्डवों को जलाने का प्रयत्न किया था, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था।

कर्ण को इतना कहकर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि इस प्रकार दलदल में फंसे कर्ण का वध करना पुण्य है, पाप नहीं। दूसरे ही क्षण कर्ण अर्जुन के वाण से जख्मी होकर गिर गया। यह थी श्री कृष्ण की नीतिमत्ता।

श्री कृष्ण को पाण्डवों द्वारा कौरवों के साथ जुआ खेलना, जूए में सब कुछ हार जाना और वन में चले जाना - इन सब बातों का पता तब चला जब पाण्डव वन में रह रहे थे। श्री कृष्ण वन में पाण्डवों से मिलने गए। वहां जाकर उन्होंने कहा कि यदि मैं द्वारिका में होता तो हस्तनापुर अवश्य आता और जूए के बहुत से दोष बताकर जुआ न होने देता। ऐसा था श्री कृष्ण का नैतिक बल और आत्मविश्वास। दूसरी और भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र आदि बड़े लोग जुआ और जूए से जुड़े अन्य दुष्कर्म अपनी आँखों के सामने देखते रहे, पर उनमें से किसी में भी उसे रोकने का साहस न हुआ।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष : 0172-4010679

*****

अगर प्रसन्न रहें तो मन शीघ्रता से वश में आता है

महात्मा आनन्द स्वामी

गीता में उपनिषदों में और योगर्दशन में मन को वश करने की सरल विधी बताई गई है। यह विधी है ———मनुष्य हर हालत में , हर प्रस्थिती में और प्रत्येक समय में प्रसन्न रहने की आदत बना लें और यही आदत उसकी प्रकृति बन जाये। मन यदि प्रसन्न रहे तो यकीनन सरलता से टिकता है। आप आजमा कर देख लें जिस दिन हम किसी कारण से क्रोधित हो जातें हैं तो जब संध्या करने बैठते हैं तो मन ईश्वर में नहीं लगता और जिस दिन प्रसन्न हो, ईश्वर भक्ति में बहुत आन्नद आता है। पर इस सीधी और सरल बात को हम समझते नहीं। उदाहरण के लिये नौकर ने प्याली तोड़ दी । हम उसको गालियां दिये जा रहें हैं और अपने चित को जलायें जा रहें है। अरे दो रूपये की प्याली ही टूटी हैं तुम अपना करोड़ों रूप्ये का मन क्यों जला रहे हो।

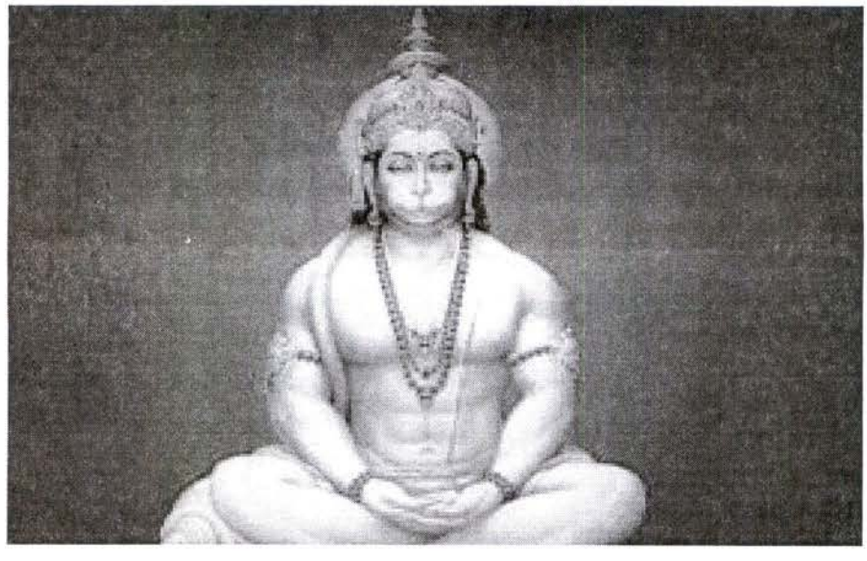

ईश्वर को तो हम कहते हैं सत–चित– आनन्द, आनन्दस्वरूप और आनन्द के भन्डार। ऐसे ईश्वर को मिलना है तो हमें सवयं भी र्सवदा आन्नद में रहने वाला बनना होगा। जो मनुष्य अपने जैसे को मिलना चाहता है, वह उसे मिल जाता है। जुआरी को ढूंढने से जुआरी मिल जाता है और शराबी को शराबी। इसलिये जब हम सत–चित– आनन्द ईश्वर को ढूंड रहे है तो हमें भी सत–चित– आनन्द बनना होगा, तभी वह मिलेगा। श्री राम का जीवन पढे तो एक बात जो झलकती है वह है कि वह हर हाल में प्रसन्नचित रहते थे।

याद रखें जब हमें किसी से अपेक्षा और शिकायत नहीं होगी तो मन अवश्य प्रसन्न रहेगा। जब हमारा मन कृतज्ञता से भरा रहेगा———हे ईश्वर आपने बहुत कुछ दिया, हे माता पिता , आप ने पाला पोसा और इस योग्य बनाया। जब हम कहेगें———ऐहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है दोस्तो , जब हम दूसरों की सेवा को धर्म बना ले तो मन अवश्य प्रसन्न रहेगा। मन दुखी कब होता है? जब हम दूसरों से अपेक्षायें रखतें है और अपेक्षाओं पर दूसरा खरा नहीं उतरता। हमारा मन दूसरों के प्रति ईष्या द्वेश से भरा रहता है।

मन प्रसन्न रहे तो शरीर भी स्वस्थ रहता है। प्रत्येक समय शिकायत करते रहने से, दूसरों के दोष निकालते रहने से मन की प्रसन्नता भाग जाती है और आप अनुभव करेंगें की शरीर भी रोगी हो जाता है। जिस किसी से भी आपको शिकायत है, उस में चाहे कितनी भी बुराईयां है उन्हें भुलाकर जो भी उसमें अच्छा गुण है उसे याद करें मन आपका प्रसन्न हो जायेगा याद रखें बुरें से बुरे मनुष्य में भी कोई न कोई गुण अवश्य होता हे। उसी का विचार करों

प्रसन्न रहने के लिये एक और बात पर ध्यान दें। यदि किसी मनुष्य की कोई बात आपको अच्छी नहीं लगती, तो उसे किसी के सामने कुछ न कहो पर एकानत में बिठाकर प्यार से कहो।

याद रखें मानविय शरीर बार बार नहीं मिलता। इसको पाकर भी यदि प्रभु से नहीं मिलोगे तो कब मिलोगे।

*****

Is Prayer a matter of soul or Soul & body both

Neela Sood

I have been reading articles on 'Prayer'. Writers of different shadeshave given their views but somehow one area which remained untouched is-----is prayer a matter of soul or of soul and body both?

I touched this aspect because people of different sects and religionsare seen adopting different physical postures while offering prayer. In other words they believe that both soul and body have to take partin prayer. For example in many sects of Hinduism a man while offering prayer prostrates. Many tweak their ears then many press their nose. Many move up and down. Many press themselves against the wall. Many raise their hands. In a few places they dance even. Many squat with their hands on knees and two fingers joined. Even in Sikhism the one who offers prayer prostates before Guru Granth sahib. In Islam also prayer is not only a spiritual hymn, it is also a set of movements through standing, kneeling and prostration, combined with a conscious mental concentration on the verses recited in the prayer. A few beat their chests also. Christians also kneel on a table. Even in Arya Samaj, people are advised to sit straight and not bend.

This is not all, many believe that body has to be first cleaned bytaking of shower or dip in the river then only prayer can be offered. Even sage Patanjali prescribes 'Shauch' i.e. cleanliness before'Samadhi' Then there are many who believe that something has to be applied on the forehead. There are may who believe that prayer has to be before taking food. But, in panjab, where Jagrata is very popular form of prayer to goddess, people are seen taking sumptuous food before the prayer is started. This makes one to believe that in prayer' body has a vital role to play.

But, if body and physical postures has a role then what do we say of the disabled, sick and elderly who find it difficult to bend or move their limbs leave alone prostrating. When I questioned a learned scholar, his reply was that all bodily actions and postures are aimed at making the mind stable to help focusing on the divine power or any other power you have accepted; by detaching one from the worldly affairs. It is called, 'dhyana.' also.

He may be right but I believe that the one who is already one with the higher up, does not need the physical postures and austerities. Prayer can be offered any time, in any position and in any state. All that we need is a peace of mind. That peace may dawn on us anywhere and because of any reason. Without stable mind, all prayers are only rituals. When mind is disturbed different postures help very little. So best thing is to have peace of mind.

This peace of mind comes to those who remain happy by not allowing various set backs to snatch away their peace of mind,. This peace comes to those who have full and unflinching faith in God. Who accept that he alone is the creator of this uniververse. He has given us everything for our enjoyment and we are not the owner of these materialistic things. This peace of mind comes to those who keep themselves engaged in selfless service of humanity. This peace of mind comes to those who believe in performing their duty without complaints with surroundings.

*****

चाण्कय और धर्म

डा. महेश पोरवाल

चाण्क्य ने अपने अर्थशास्त्र में धर्म शब्द का प्रयोग 150 बार किया है। यह बताता है कि चाण्क्य के लिये धर्म कितना महत्व रखता था। चाण्क्य ने अपने राज्य का बहुत विस्तार किया और अपने राज्य के लिये अभूतपूर्व सम्पदा पैदा की फिर भी वह अपने जीवन में अध्यात्मिक रहा, भौतिकबाद उसे छूने न पाया। इसका कारण था कि वह जो भी कार्य करता था वह धर्म के रास्ते पर चलता हुआ ही करता था। इतने बड़े साम्राज्य का मन्त्री होने के बाबजूद भी वह स्वयं एक साधारण घर में रहता था। कहते है कि एक बार एक चोर इस मंशा से कि इतने बड़े साम्राज्य के मन्त्री के घर में अपार सम्पदा होगी, रात को चाण्क्य के महल में चोरी करने के लिये चला गया। उस की हैरानगी की सीमा नहीं रही जब कि उस ने चाण्क्य को एक पुराने कम्बल में एक साधारण चारपाई पर सोया पाया। दूसरे कमरे में गया तो देखा, नये कम्बलों की गांठ पड़ी हुई थी। चोर पकड़ा गया था, पर वह अपने को रोक न सका और उसने चाण्क्य से पूछ ही लिया ———मान्यवर जब न ये कम्बलों की गांठ पड़ी हुई है तो आप पुराने कम्बल का प्रयोग क्यों कर रहे है। चाण्क्य का उतर था वे जरूरतमन्दां को देने के लिये लिये गये हैं। उन पर मेरा कोई अधिकार नहीं। यह था चाण्क्य के लिये धर्म का महत्व और स्वरूप।

चाण्क्य के लिये असली धन उसका ज्ञान था। उसका मानना था कि यह ज्ञान ही उस की सब से बड़ी शक्ति और सम्पदा थी और इस ज्ञान द्वारा वह कई ऐसे राज्य बना सकता था। चाण्क्य के लिये जीवन में धर्म का महत्व इस बात से भी आंका जा सकता है कि उसका उदेश्य राजा को धार्मिक राजा और राजऋषि बनाना था। चाण्क्य ने अपने शास्त्रों में राजधर्म की बार बार बात की है।

चाण्क्य के लिये उवतंसपजलए मजीपबेए चपतपजनंसपजलए कनजल दक तमेचवदेपइपसपजलए उवदह वजीमते धर्म के अंग थे चाण्क्य वै अनुसार व्यक्ति को भौतिक सुख भोगने का पूर्ण अधिकार पर ऐसा वह धर्म की मर्यादा के बाहर जा कर न करे। उसके अनुसार अध्यात्मबाद कोई बूढ़ों के लिये या फिर सन्यासियों के लिये ही नहीं अपितु सब के लिये है। क्योंकि अध्यातमबाद ही वेदों की सुक्ति के अनुसार त्यागमय ढंग ये भौतिक सुखों को भोगने की शिक्षा देता है।

इसी तरह चाण्क्य ने कहा कि यह सोचना गलत है कि अध्यात्मबाद अगले जीवन को अच्छा बनाने के लिये होता है। अपितु यह तो दोनों को ही अच्छा बनाता है, इस जीवन को और अगले जीवन को।

चाण्क्य ने कहा कि धर्म अध्यात्मबाद का अभिन्न अंग है इस लिये अध्यात्मबाद ही आपको अच्छे कर्म करते हुये धन कमाने की और प्ररित करता है। इस लिये अध्यात्मबाद तो मनुष्य को अमीर बनाता है न कि गरीब। यदि हम अपने चारों और नजर उठाये तो आपको अमीर व्यक्ति ही पुण्य काम करते नजर आयेंगे। चाहे बिल गेटस है या अजीम प्रेम जी । गरीब व्यक्ति तो अपनी झोली

भरने में ही लगा रहता है। जब अपना पेट भर जाता है तो आगे के लिये जमा करना शुरू कर देता है। अपना घर भर जाये तो बच्चों की सोच आ घेरती है। आज भारत में जो सरकार की सबसिडी खा रहे हैं उन में 75 प्रतिशत ऐसे हैं जो उस के हकदार नहीं फिर भी कोई ढंग निकाल लते है। इस लिये यह सोचना कि अध्यातमबाद गरीबों के साथ जुड़ा है बिल्कुल गलत सोच है। चाण्क्य का धर्म का स्वरूप वेद के इस मन्त्र के अनुरूप था

हे ईश्वर दयानिधे। भवत्कृप्याअनेने जपोपासनादि कर्मणा, धर्मार्थकामनोक्षणां सुघ' सिद्धिर्भवेन्नः।

इसका भवार्थ है------हे दयालु प्रभु मुझे कृपा कर के धर्म के मार्ग पर ही प्रश्स्त करें ताकि मैं जो भी कार्य करू वह उतम हो और मैं उतम अच्छे कार्य करता हुआ ही धन कमाउं क्योंकि ऐसी कमाई ही पवित्र हाती है। इस अच्छे धन का प्रयोग मैं परिवार, समाज और देश में प्रति अपने कर्तव्य पूर्ती के लिये और भौतिक ईच्छाओं की पूर्ती के लिये करूं। जब मैं ऐसा करूंगा तो मोक्ष यानी कि परम आन्नद का रास्ता मेरे लिये स्वयं खुल जायेगा।

कहने का अर्थ है कि मोक्ष प्राप्ती के लिये आपको दुर्गम पहाड़ों पर जाने की आवश्यकता नहीं, धर्म के रास्ते पर चलते हुये कार्य करें और ऐसे कार्यों द्वारा कमाये धन का प्रयोग अपनी ठीक ईच्छाओं की पूर्ती के लिये करें, मोक्ष आपको अपने आप मिल जायेगा। चाण्क्य ने भी धर्म की यही परिभाशा दी।

किसी विद्वान ने इस को समझाने के लिये यह बहुत सुन्दर उदाहरण दिया है। मान लो आप किसी बड़े कपड़े के टुकड़े को चार भागों में काटना चाहतें हैं। इस के लिये आप को उस कपड़े के टुकड़े को केवल तीन जगह से काटना पड़ेगा, चौथा टुकड़ा स्वयं निकल आयेगा।

इसी तरह जब हम अपने जीवन को इन तीन नियमों से बांध कर चलाते हैं। पहला.--धर्म के मार्ग से अलग नहीं होना, दूसरा उतम साधनों द्वारा ही धन अर्जित करना, तीसरा उस धन का प्रयोग अच्छे काम की सिद्धि के लिये ही करना तो चौथा टुकड़ा मोक्ष के रूप में स्वयं ही निकल आता है। उस के लिये अलग से कुछ करने की आवश्यकता नहीं। धर्म की शिक्षा हमें कौन दे सकता है। इसके उतर में कहा है---घर में माता पिता या फिर सत्संग के माध्यम से। वह बच्चा बहुत भाग्यशाली है, जिसके माता पिता अध्यात्मिक और धर्म से जुड़े होते है। बच्चा सब से अधिक आने माता पिता के चाल चलन से सीखता है।
चाण्क्य के अनुसार यह सोचना कि मोक्ष अचानक ही झोली में आ जायेगा बिल्कुल गलत है। मोक्ष तो धर्म के अनुसार जीवन जीने से ही बहुत लम्बे तप और अभ्याास का फल है।

चाण्क्य चाहता था कि हर व्यक्ति बुद्धिमान हो पर अगर बहुत बुद्धिमान नही तो उपर लिखे वेद मन्त्र के अनुसार धर्म , अर्थ और काम के आपस में सम्बन्ध को जानकर जीवन जीये । यह बात केवल जीवन के लिये ही अर्थ संगत नहीं बल्कि राज्य को चलाने के लिये, वयापार को चलाने के लिये भी उतनी ही प्रासगिंक है। भौतिक बस्तुओं की इच्छा करने में या फिर अधिक धन कमाने में कुछ खराब नहीं यदि वह धर्म के नियमों के अनुसार किया जाता है। यदि भौतिक इच्छाओं को दवाया जायेगा तो वह एक दिन ज्वालामुखी की तरह फूट कर और अधिक नुकसान करती है। इस लिये मर्यादा में रहकर और त्यागपूर्ण ढंग से ईच्ठाओं का भोग करें न कि उन्हें दबायें।
यही नहीं चाण्कय के अनुसार प्रकृति की मर्यादाओं के विरूध चलना भी अर्धम है। हमारा हर कार्य प्रकृति के अनुसार होना चाहिये।

*****

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।
न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

What Swami Dayanand said about eligibility for marriage ?

Swami Dayanand in his book Satyarth Prakash has referred to Vedas.

Rig Veda iii -55,16 Let girls who are well educated and cultured, fit to bear all responsibilities of married life, and are in the full bloom of youth, who, by the practice of Brahmacharya, have reached a state of excellence and wisdom, which only those of great learning and high virtues can attain, marry husband of mature age and bear children with them. Early marriage is even more harmful to a woman than to man.

Rig Veda. 1.179.1 says –' just as men, quick of perception and action, energetic , in full youth, strong in body and capable of discharging reproductive functions, marry maidens, who are young, dear to their hearts and enjoy life to their good old age and are well-blessed with children and grand children, so should all women do.

Continuing he states ,

Marriage should be under the control of contracting parties. Even if parents ever think of arranging a match, it should, under no circumstances, ever be done without the consent of their children, for when people choose their partners for life themselves, there is less likelihood of mutual disagreement and the children born of such a union are also of a superior order. There is nothing but trouble in store for those whose marriage is not of their own choice-they having been simply forced into it. The real factors in marriage are the bride and the bride-groom, and not their parents. It is they who will be happy, if they agree well together and they alone will suffer if they disagree.

Before a man and a maid think of marrying, they should see that they suit each other in point of knowledge, disposition, character, beauty, age, strength, family, stature and build of body and the like. Until they suit each other in all these things, no happiness can result from marriage. Nor can marriage in early life can lead to any beneficial result.

As long as in this country sages and seers, emperors and kings and other people followed the aforesaid system of marriages of choice (swayamvara vivah) preceded by a life of bramacharya devoted to the acquisition of knowledge and culture, it continually progressed and prospered. Ever since its inhabitants had neglected Brahnacharya and the pursuit of knowledge, and have, instead, taken to child marriage-and that too under the control of the parents,-India had been steadily declining. It, therefore, behoves all good and sensible men to do away with this pernicious system of child marriage, and introduce instead marriage by choice in accordance with the division in to classes, which should be based on the qualifications, accomplishments and character of the individuals.

It is incredible that a man who walked on this earth in the 19th century when not even one percent women would go to school , had so progressive thinking, but country has forgotten such a great personality.

*****

अपने दिन की शुरूआत अपना बिस्तर ठीक करने से प्रारम्भ करे।

नीला सूद

आप जब सुवह उठते है तो आपका बिस्तर मुचड़ा हुआ होता है। जो चदर या कम्बल उपर लेते हैं वे भी बिखरें होते है। हम यह मान कर चलते हैं कि या तो काम करने वाली उसको ठीक करेगी या फिर मां या पत्नि, चाहे पत्नि आदमी की तरह कमाने ही जाती हो। यदि आप मानसिक और शारिरिक तौर पर स्वस्थ रहने के इच्छुक है और आप में dignity of labour है तो सुवह बिस्तर से बाहर आकर अपना बिस्तर ठीक करने की आदत डालें। इस से आप में उर्जा पैदा होती है और आप अपने दिन के कार्य करने के लिये अधिक योग्य बन जाते है। Charles Duhigg in his book The Power of Habit says that daily bed-making becomes a keystone habit, something that kickstarts a chain of other good decisions throughout the day, and gives you a sense of taking charge. According to the author, these keystone habits lead to a greater sense of well-being and stronger skills at sticking with a budget.

अगर आप यह सोचते हैं कि इस काम को करने से जो कि आप का नौकर भी कर सकता है आप के समय का दुर्पयोग है तो आप को अपनी सोच ठीक करनी होगी। जीवन, अपने समय का प्रयोग पैसे कमाने के लिये ही नहीं है। सब से महत्वपूण्र बात है कि आप मन चित मे प्रसन्न रहें और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें। यह आपके जीवन को अनुशासित भी रखता है ।

भारत के नवीन मध्य आय वर्ग मे जो एक सब से खराब बात आ गई है वह है कि अधिकतर लड़के और लड़किया घर के काम में सहायता करना तो दूर अपना काम भी नहीं करते । बहुत से तो यह कहने में गर्व महसूस करते है, कि मैड करती है। मेरे अनुसार तो यह उनकी दयनिय हालत को र्दशाती है क्योंकि उस व्यक्ति से निकम्मा और कोई नहीं जो कि अपने कामों के लिये, जो की वह स्वयं करने के सक्षमहै, दूसरों पर ही निर्भर करता है। दोश उनका नहीं , दोष है मां बाप का जो कि बच्चों की सारी उमर सेवा करना, और कुछ तो नौकरों की तरह बच्चों की सेवा करना अपना धर्म मानते है। खैर उनका अपना जीवन है पर इस से वे अपने बच्चों का नुकसान अवश्य करते है।

एक और बात जो व्यक्ति घर के कामों में वयस्त रहता है वह जीवन के उतार चड़ाव में उदास नहीं होता। काम करने की आदत उसकी उदासी को ले भागती है।

इसके साथ ही अपनी आदत बना लें कि खाना खकर अपनी पलेट कम से कम खुद धोयें। गंदगी देखें तो किसी को आदेश देने की बजाये खुद झाड़ू पकड़ कर लग जायें। दूसरा आप को देख कर खुद आ जायेगा। आप कपड़े खुद धोयें। आजकल के माता पिता को मैं यह ही बताना चाहूंगी कि इससे आप के बच्चो का समय का दुर्पयोग नहीं होगा बल्कि जीवन में वु अधिक सफल बनेंगे। जीवन किसी बड़े नामी कालेज में दाखला लेने या फिर किसी नौकरी को प्राप्त करने तक ही नहीं, जीवन तो बहुत बड़ा है जिस में हम अलग अलग तरह की परिक्षाओं से गुजरतें है। उसमें ऐसी आदतें अधिक सहायता करती हैं।

*****

SINCERE PLEDGE

Here is an incident relating to Gurudev RabindranathTagore's life when his health had been badly affected. Mahtama Gandhi reached Shanti Niketan to inquire about his health. Some Teachers and Doctors of Shanti Niketan told Mahatama Gandhi that Gurudev Rabindranath Tagore's health had improved and he was better than before, but he continued working the whole day without rest. If he took rest for few hours after consuming lunch, he would recover soon and completely. They requested him to persuade him to take rest as he would definitely agree to follow his advice.

Instantly, Mahatama Gandhi approached Gurudev, when he was doing some work while sitting on the chair. Bapuji politely requested, "Gurudev! You have been unhealthy. I request you to take rest for few hours during the day." Gurudev smiled and said, "I, at the age of 12, while performing yagyopavit sanskar , had undertaken a pledge that I will not take rest during the day time. Accordingly, for the last 67 years, I have never slept during the day. Now, if your goodself orders me to break that pledge, I am ready to do so."

Bapuji could not afford to ask Gurudev to break his pledge. However, Bapuji said, "Gurudev! You need not lie down, but definitely take rest by chanting "Ram", "Ram" in a sitting posture. Politely looking at Bapuji, Gurudev Rabindranath Tagore gave him his silent consent.

*****

Dr. O.P Setia

एक मानव के लिये श्रैष्ठ सुख क्या है?

अशोक कुमार

अगर इतिहास के पन्नों को परता जाए तो शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हुआ होगा जिसने कभी सम्पूर्ण सुख अनुभव किया हा। चाहे वह राजा ही क्यों न हो। मानव प्रवृति सदा से यही रही है किवह जीवन भर अपने लिए भौतिक सुख संमप्दा को एकत्रित करता रहता है। पर वह नहीं जानता कि सुख–संमप्दा सदा गंगा समान बहने वाली सरिता नहीं है, समय के साथ–साथ उसका जीवन अल्प, अस्थायी, क्षणिक हैं। भौतिक सुख प्रकृितक तौर पर आसुरक्षित और सदैव रहने वाला नहीं होता।

प्रश्न उठता है सुख है क्या? हर व्यक्ति सुख को अपने हिसाब से आंकता है। कुछ के अनुसार अधिक धन होना सुख है तो कुछ के अनुसार , बिना रोक–टोक अधिक धन व्यय करने की क्षमता ही सुख है। कुछ अधिक सम्पति का होना या हर प्रकार की सुविधा जिस में शरीर को हर प्रकार का सुख–आन्नद, आराम मिले को सुख मानते हैं। कुछ कहते हैं सफलता का नाम सुख है, कुछ कहते है निडरता सुख है तो बहुत से मानते है कि जीवन में निराशा का न होना ही सुख है। अगर गहराई से देखा जाए तो सुख एक ऐसी स्थति, व्यावस्था, परिस्थति, सोच या अनुभव है जिस से व्यक्ति रमशीयता, सुहावना आन्नद, संतोष–शांति, मुस्कराहट मेहसूस करता है । जिस में पीड़ा और निराशा नहीं होती।

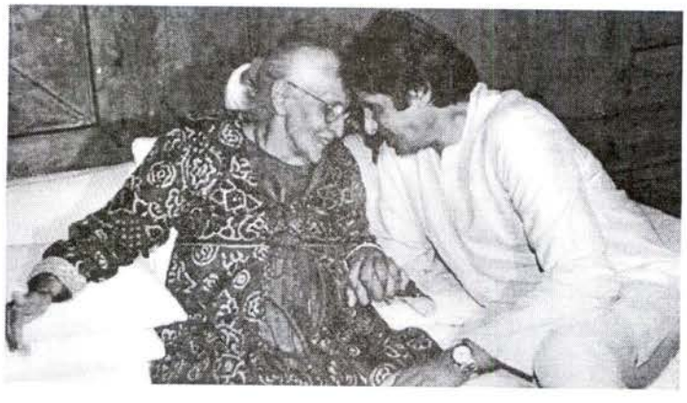

इस सुख के कई साधन है जैसे कुछ मनुष्य कभी कोई कुकर्म, पाप या किसी की आत्मा को अघात नहीं कर ने में ही खुशी सुख महसूस करता है। बहुत से ऐसे है जो दूसरों के काम आ जाये तो सुख महसूस करते है। उनके लिये मानवता सेवा, दलित वर्ग को उनके अधिकार दिलाना सुख है, अन्याय को मिटाना सुख है। गुरू नानक, कबीर, संत तुका राम और रविदास ने, उंच–नीच, भेदभाव, वर्ण व्यावस्था को खत्म करना, सामाजिक कुरितीयों को जड़ से उखाड़ना में ही सुख अनुभव किया। कुछ लोगों का महत्वपूर्श तीर्थ स्थानों, यों या देव भूमि का स्पर्श करना ही सुख है। कुछ कहते हैं साधु, संतों धार्मिक प्रचारकों की शरण, सत्संग में जाना, अर्चना, भक्ति करना ही सुख है।

कुछ ऐसे हैं जो बदला लेकर सुख महसूस करते है। एक राजा था जिस ने सुख के लिए केवल ऐसा वरदान मांगा कि जिस वस्तु को स्पर्श करू वही सोना बन जाए और वही उसका दुख बन गया। शराब पीने वाला जब पी रहा होता है तब तो सुख का अनुभव करता है पर कुछ समय बाद वही शराब उसके पतन और दुख का कारण बन जाती है। इस तरह अगर सुख का विषलेशण किया जाए तो हर एक का अपना दृष्टिकोण है।

गांधी, नेहरू, बुद्ध ने सत्यता और आहिंसा में सुख प्राप्त किया। महापुरूषों का कहना है मानवता सेवा, दलित वर्ग को उनके अधिकार दिलाना सुख है, अन्याय को मिटाना सुख है। कई राजाओं की जीवनीयों, शासन काल से पता चलता है उनका उददेश्य प्रजा पीड़ा निवारणा ही सुख था। कुछ राजाओं ने उन्नत भोजन पकवानों, अधिक रानियां और दासीयां रख कर सुख प्राप्त किया। कुछ ने अपने आप को दैवी शक्ति बता कर सुख प्राप्त किया और कुछ ने सुख की खोज में राजपाठ त्यागे, बनवास, वैरागया अपनाया और कुछ ने अपने धर्म के लिये अपना बलिदान देने मे ही सुख पाया। इस प्रकार सुख के प्रति हर एक का अपना मत दृष्टिकोण है।

परन्तु अगर आधुनिक युग में सुख को परिभाषित किया जाए तो सुख से अभिप्राय केवल आन्नद, एशवर्य, .भोग विलासता, अमोद–प्रमोद, व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धी करना, और इन्द्रीयों को सन्तुष्टि देना ही तक रह गया है। सुन्दर भव्य निवास, भ्रमश के लिए वाहन और क्षमता से अधिक धन होना जहां पर नाममात्रा हस्ताक्षेप हो, किसी मर्यादा, संस्कारों, शिष्टाचार, सामाजिक नियमों का अनुसरण ना करना पड़े और जीवन में कोई प्रोढ़ता, परिवारिक प्रशन, प्रचार, पाबांदी, प्रतिरोध प्रभुता और पुरूषार्थ ना हो, वही सुख समझा जाता है। इस सुख प्राप्ति के लिए डांस वार, किटी पार्टियां, कल्ब, होटलों में नियमित रूप से जाना और मंदिरा सेवन, बड़े नोट

निकालना, और श्रृंगार पर धन व्यय करना ही सुख समझा जाता है। पर ऐसा सुख का मार्ग मदिरा सेवन की तरह क्षणिक सुख देने वाला है व सदैव रहने वाला या आन्तिरिक सुख नहीं दे सकता व अक्सर सर्वनाश की ओर ले जाता है।

कारण ऐसे सुख की प्राप्ती के लिये अक्सर भ्रष्टाचार, भ्रष्टसाध्न, झूठ, कपट का सहारा लेना पड़ता है। जिस में टैक्स चोरी, रिशवतखोरी, जमाखोरी और राष्टीय धन में सेंध लगाना, अवैध भूमि ग्रहश, अवैध क्रंसी छापना, घुटालों से मूंद्रा बहाना, विदेशों में काला धन इक्रत्रित करना और सबसे अधिक भंयकर विनाशकारी विधि डरगज (कतनहे) आदि के व्यापार द्वारा मानवता से खिलवाड़ करना। ऐसी सुख संम्पदा की नीव कमजोर और दीमक ग्रस्त होती है। छल कपट, परिश्रम रहित संपदा में उर्जा, सत्यता, पवित्रता नहीं होती और जब कभी ज्वार–भाटा उठता है तो सब कुछ बुलबुना बन जाता है। ऐसे धन से सुख तो क्षणिक होता है पर दुख न खत्म होने वाले अन्धेरे की तरह होता है, संतोष नहीं सजा मिलती है, गौरव नहीं गरुर बढ़ाता है, देव नहीं दानव बनाता है, करुणा नहीं कपट पनपता है, तो फिर उत्तम सुख किसको कहा जाए। **जहां तक मैं समझता हूं उत्तम सुख केवल अच्छी संतान और स्वास्थय है अगर माता-पिता अपने बच्चों के हाथ में संस्कारों और शिष्टाचार की वीणा पकड़ाएंगें तो मानव कल्याणकारी संगीत निकलेगा।** अच्छी संतान होगी तो प्रशंसा प्रसिद्धी मिलेगी। बुढ़ापे में माता–पिता को सुख मिलेगा, पारिवारीक उतरदायित्व निभाएंगे। परिश्रम की कमाई से संतोष फल मिलता है, गंगा जैसा चरित्र रहता है। पर अच्छी संतान तो केवल धर्म, संस्कार, शिष्टाचार और त्याग की शिक्षा से निर्माणित होती है। इसके लिए माता पिता को अपना आचरण अनुकरणिय बनाना होगा। सत्संग, मंदिर, धर्मिक आयोजनों में जाना होगा। बड़ों, गुरुजनों का आदर करना होगा। मांस–मदिरा से परहेज, घर में सहनशीलता दिखनी होगी मधुर शब्दों का प्रयोग करना होगा। काम–क्रोद्ध, लोभ की लालसा प्रदर्शन से हटना होगा। केवल मानव सेवा आधरित धर्म सिखाना होगा और जीवन में कुछ उद्देश्यों का और उन तक पहुंचनें के लिए जो साधन अपनाये जायें वे नैतिक और आचार नीति के होने चाहिए। सादा जीवन उच्च विचार की सोच देनी होगी। नम्रता, जिज्ञासा, सेवा जैसे गुणों से सुशोभित करना होगा। जिस प्रकार कृष्ण ने सुदामा और विदुर का भोजन खाया व रामायण जैसं काव्य का ज्ञान देना होगा।

कहने का अर्थ है कि संतान को बुरे आचरणें से दूर रखना होगा। संतान का मुख्य काम शिक्षा प्राप्ति, ज्ञान वृद्धि करना है। अगर आपकी संतान सत्संगी, धर्मी, मानव कल्याणकारी, आज्ञाकारी और भोतिकताओं से दूर है तो वही सुख संपदा है। ऐसा करने से आपके घर में ऐसा वृक्षारोपण होगा जिसमें करुणा, मधुरता प्रगति रुपी फल–फूल खिलेंगे, स्नेह, शांति, संस्कारों की सुगंध आएगी। ऐसी गुणकारी संतान सदा का सुख है। अच्छी संतान अमृत शब्द उच्चारण, आदर–सत्कार करती है घर को प्रेम, शांति मंदिर, दुखःसुख वितरण स्थल बनाती है। बदनामी का कारण नहीं बनती, अग्नि, विष बाण नहीं छोड़ती, उनके माता–पिता किसी भी दबाव भय में नहीं रहते है न ही असुरक्षित महसूस करते हैं। उन्हे तरस, दर्द का जीवन नहीं भोगना पड़ता। वह माता–पिता ही भाग्यशाली है जिन्हें संतान कारण समाज में सिर नहीं झुकाना पड़ता और वही सर्वोतम संतान सुख है।

अगर संतान सुखकारी है, तो चिंताएं कम होगी, अच्छा स्वास्थय होगा, शारिरीक, मानसिक रोग दूर होंगे। भावी सुरक्षा सुनिश्चित होगी। भक्ति मानव सेवा के लिए अवसर मिलेंगे रचनात्मक कार्यों होंगे और अच्छे स्वास्थ्य में बिना बैसाखियों के अपना भार उठा पाओगे। अगर स्वास्थय ठीक है तो गुफा रुपी शरीर हर पदार्थ को स्वीकार करेगा, नही तो शेष जीवन तरस, पश्चाताप की अग्नि में सुलगेगा और अपनी ही संतान समय और साधनों के अभाव स्वरुप मानव–वृद–आश्रमों में पंजीकरण करवा देगी। अन्यथा जीवन की अंतिम बेला में आप अपने ही घर में गैर बन जाओगे इसीलिए अच्छा स्वास्थय होना अनिवार्य है। जीवन बगीया में सुख संपदा का आनंद तभी आता है जब शरीर निरोग और सुंदर हो और सफलता की उंचाईयों का स्पर्श तभी संभव है। अगर आपकी पाचन क्रिया, रक्त संचार नियंत्रित है, हृदय रोग रहित, समस्त अंग क्रियाशील है, तभी हरेक सुख का आनंद आएगा, आलस्ता लुप्त होगी, चुस्ती–फुर्ती, उर्जा, उत्साह प्रदर्शित होगा और चित उदासीन नहीं होगा यदि शरीर स्वस्थय नहीं तो मन स्वस्थय नहीं, मन स्वस्थ नहीं तो विचार स्वस्थ नहीं, तो भौतिक सुख संपदा किस लाभ की, जब आप चल फिर नहीं सकते, खा–पी नहीं सकते, सुन नहीं सकते आपकी संपदा होते हुए भी आप चिकित्सा लाभों से वंचित है और कोई आपका ध्यान नहीं रखता। फिर निर्माणित संपदा का क्या अभिप्राय? इसीलिए प्रभु से अच्छी गुणकारी संतान और स्वास्थय की कामना करनी चाहिए। यही जीवन में श्रेष्ठ सुख है। नही तो जीवन का कोई अर्थ नही, जीवन में सन्नाटा रह जाता है, सांस होते हुए शरीर शव बन जाता है, मन मर जाता है, आशाएं ओंस बन जाती है, हृदय हार जाता है, हस्त–रेखाऐं हंसती है, सांस सिसकते हैं फिर याद आता है श्रेष्ठ सुख है क्या।

उप–आबकारी और कर कमीशनर, (सेवा निवृत),
पंजाब। मो. 98789–22336

*****

Two nations were created for harmony, not conflict'

Dr Ramesh Kumar Vankwani

For Pakistan Hindu leader, Vinayak Damodar Savarkar was the freedom fighter not Nehru or Patel

Historically, Indo-Pak subcontinent has been a unique piece of land for hundreds of years owing to the fusion of different cultures and people belonging to diverse backgrounds. The era of Mughal Emperor Akbar was one of the bright examples of tolerance, peace and co-existence. Having respect for every religion, he promoted the culture of love and peace for all.His cabinet included not only Muslims, but Hindus also. His wife Jodha Bai and army chief Maan Singh, both were followers of Hindu religion and key decision makers as well.

The situation went wrong when the British colonial powers reached the Indian ports under the cover of trade. It was unbelievable for them to see the peaceful co-existence of Hindus and Muslims. Following the policy of "divide and rule", they hatched conspiracies between Hindus and Muslims to weaken the strong bond between local communities. Although, sadhus, sufis and saints were there to calm down people's emotions and were spreading the message of love, peace and respect for each other but the fire ignited by British rulers was spreading rapidly.

Tipu Sultan, also known as the Tiger of Mysore, fought several wars to save his land from British imperialists. According to various historians, he founded his rule on the basis of golden principles of humanity , where all citizens regardless of religion were treated as equal. Lakshmibai, the Rani of Jhansi, was one of the legendary characters of the War of Independence, 1857.The war was in fact initiated by a Hindu sepoy , Mangal Pandey , who, along with his Muslim and Hindu fellows, raised voice against the introduction of new cartridges that were wrapped with the fat of cow and pig. .

The shameful act by the Bri tish Raj was considered as an attack on religions and forced Hindu and Muslim sepoys to join hands under the flag of Mughal ruler Bahadur Shah Zafar. Hundreds of people sacrificed their lives in this noble cause, but failed.

Later, the British were successful in taking over the Indian subcontinent by trapping different local segments in the web of religious · intolerance and they succeeded in ruling for ninety years more. The Indian independence movement spanned a total of 190 years (17571947) during which a number of activities and ideas emerged to end the British ru le. Mohammad Ali Jinnah, Mohandas Karamchand Gandhi, Bhagat Singh, Vinayak Damodar Savarkar, Subramania Bharati, Allama Iqbal, Josh Malihabadi, Mohammad Ali Jouhar, Bankim Chandra Chattopadhyay , Kazi Nazrul Islam, Sarojini Naidu and Begum Rokeya were

some of legendary personalities, who played a pivotal role in the Independence movement.

The motive behind the establishment of the Indian National Congress and All India Muslim League was to raise political awareness and protection of rights. Mahatma Gandhi, leader of the Indian National Congress, strongly believed that Hindu-Muslim cooperation was essential for political progress against the British and thus he actively participated in the Khilafat Movement in support of the Turkish Ottoman Caliphate.On the other hand, leading Muslim leader Muhammad Ali Jinnah was known as the ambassador of Hindu-Muslim unity due to his continuous efforts for establishing cordial relations between followers of the two religions. Gandhi's vision of an independent India was based on religious pluralism and tolerance but due to fear of future exploitation at the hands of a majority under the British democracy set up, Muslim League led by M A Jinnah floated the demand of a Muslim-majority separate state on March 23, 1940.

Although, atrocities of British rulers became more intense with each passing day but after every dark night there is dawn. On August 14, 1947, the subcontinent was divided into two independent sovereign countries, Pakistan and India.

While celebrating the 70th anniversary of Independence, we must understand that the purpose of establishing separate countries was not to confront each other but to ensure peace and harmony in the region. People of both countries hold collective history of outstanding struggle against the British Raj. Neither India can deny the contribution of Allama Iqbal nor Pakistan can ignore the sacrifice of Bhagat Singh. Gandhi was in fact a true friend of Pakistan and humanity , who sacrificed his life to ensure providing due share to the newly-established Pakistan. Gandhi's doctrine of non-violence deserves the attention of both countries for combating intolerance in their respective societies. Peaceloving people of both countries reject tussle-based politics and look forward for mutual cooperation to strengthen people-to-people contacts.

(The writer is patron-in-chief of Pakistan Hindu Council and member of Pakistani parliament on the platform of ruling political party Pakistan Muslim League-N)

*****

स्व श्री राजेन्द्र प्रसाद गाबा और उनके सपुत्र श्री श्याम गाबा

राजेन्द्र प्रसाद गाबा

आज के समय में जब भी आर्य समाज की कोई चर्चा हो तो 98 प्रतिशत युवक और युवतियां ऐसे ही मिलते हैं जो कि यह कहकर सन्तुष्ट हो जाते हैं कि मेरे पिता जी या दादा जी आर्य समाजी थे, पर स्वयं आर्य समाज से दूर हो चुके होते हैं। बहुत बात हुई तो किसी के मरण जन्म पर हवन करवा लिया, आर्य समाज को दान दे दिया, ऐसे में श्री राजेन्द्र प्रसाद गाबा जी के सपुत्र श्री श्याम गाबा को देख कर बहुत खुशी होती है। जैसे उनके पूज्य पिता आपने परिवार के साथ बिना नागा आते थे वैसे ही मैं उनका कई सालों से परिवार सहित आता हुआ देख रहा हूं।

श्याम गाबा

यही नहीं वे सेवा के काम में सब से आगे नजर आते हैं। ऐसे व्यक्तियों को देखकर लगता है कि आर्य समाज के दिन अभी है। आर्य समाज आय के लिये बड़े विवाह भवन या किराये के लिये कमरे बनाने से जीवित नहीं रहेगा अपितु संघटन से जीवित रहेगा और वह संघटन हमारे घर से आरम्भ होता है। घर वाले आयें नहीं और आप दूसरों को कहो कि आर्य समाज आया करो तो वह आप पर ही हंसेगा।

श्री श्याम गाबा आर्य समाज सैक्टर 32 चण्डीगड़ से से जुड़े हुये है।

सम्पादकिय

चीन और भारत

अभी मुझे भाजपा सांसद श्री वरूण गाांधी का एक लेख ——दो प्राचीन सभ्यताओं के बीच तनाव, पढ़ने को मिला।तनाव, पढ़ने को मिला। वे लिखते हैं———पिछले हफते जब मैं चीन विश्वविद्यालय में वयाख्यान देने चीन गया था तो उस समय सीमा अतिकमण को लेकर भारत और चीन के बीच जबरदस्त तनाव बना हुआ था। चीनी छात्रों में भारत को लेकर उत्सुकता थी। उन्होने मुझ से शाक्यमुनी बुद्ध से लेकर आमिर खान तक के सवाल पूझे लेकिन आश्चर्यजनक रूप से सीमा का सवाल कहीं नहीं आया। ऐसा लगा ही नहीं भारत और चीन के बीच जबरदस्त तनाव का उनको कंचत मात्र भी कुछ पता हो।

हां, श्री वरूण गाांधी बिल्कुल सही हैं। मुझे भी दो तीन वर्ष पहले चीन देश में एक महीना बिताने का अवसर मिला था। मैं चीन के पांच बड़े शहरों में रहा । सैंकडो व्यक्तियों से मेंरे संवाद हुये। एक बात जिस ने मुझे सब से अधिक हैरान किया वह यह थी कि चीन में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जिसे यह मालुम हो कि 1962 में भारत और चीन में कोई युद्ध हुआ था। या फिर सीमा को लेकर उनका और हमारा कोई मतभेद है। किसी भी रूप में वह भारत को अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं मानते । उनके लिये भारत वैसे ही है जैसे कि हमारे लिये बर्मा। हां उनके दिलों में भारत की पहचान एक अध्यात्मिक देश के रूप में है। जहां तक खानपान, रहना सहना सारा चीन पश्चिम सभ्यता में रंग चुका है। जिस बात ने दो एक ही जैसी जन्संख्या वालें देखों में इतनी बड़ी खाई पैदा कर दी है वह यही है कि जब हमारे देश में हमारे शासकों का सारा समय और धन, पड़ोसी देशों के साथ शत्रुता निभाने में लग जाता है चीन में प्रशासकों का अधिक समय अपने देश के लोगों का समाजिक सतर सुधारने में जाता है। आप योरप में घूमें या फिर चीन में दोनों में रहन सहन, सफाई और समाजिक सत्र में कोई फरक नहीं है। चीन हर क्षेत्र में हम से इतना आगे है कि आज हमारा और उनका कोई मुकावला नहीं जिस में कि सैन्य शक्ति भी है। हमारा देश जिस में कि एक बाबा द्वारा योन पीड़न के न्यायालय के फैसले के मध्य नजर एक सप्ताह के लिये सारा शासन का काम ठप हो जाये, स्कूलों में आवकाश कर दिया जाये, तीन दिनसें के लिये वकील काम ठप कर दें, किसी भी रूप से चीन तो क्या किसी और देश का भी मुकाबला नहीं कर सकता। परन्तु हमारे देश में देश भक्ति की परिभाषा ऐसी बन गई है कि अपने देश की और इसकी सभ्यता की हर समय झूठी प्रशंसा करते रहो।

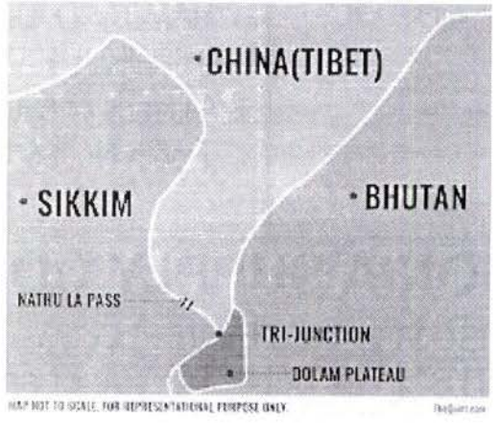

अभी मुझे अखवार के माध्यम से पता लगा कि मध्यप्रदेश के स्कूल की किताबों मे न केवल यह बताया गया है कि भारत और चीन के बीच में 1962 में युद्ध हूआ पर यह भी लिखा है कि भारत की उस युद्ध में जीत हुई और चीन को भागना पड़ा। 1962 का युद्ध तो मेरे सामने ही हुआ था अगर हम 55 साल पहले हुई बात के बारे में अपने बच्चों को इतना झूठा ज्ञान देने मे संकोच नहीं करते तो अंदाजा लगाईये कि हम जो इतिहास पढ़ाते हैं उस में कितनी सच्चाई होगी।

यह सच्चाई है कि हमारा कोई भी पड़ोसी देश हमें मित्र नहीं मानता चाहे हिन्दु बहुमत वाला देश नेपाल या बंगला देश, जिसे भारत ने आजादी दिलवाई थी, उन सब का झुकाव चीन की तरफ है। अवश्य हमारे में कुछ कमी है। और यह कमी है कि हम नफरत से ही जीना ही जीवन मानते है।

यह बहुत दुख की बात है कि आज हमारी सभ्यता ही ऐसी बन गई है । हम अपने बच्चों को शुरू से ही घृणा का पाठ पढ़ाते हैं। हमारे बच्चे को बाकी चाहे कुछ पता न हो पर यह बात पता होगी कि पाकिस्तान और चीन हमारे शत्रु है। उस बच्चे का मानसिक स्तर क्या होगा जब उसे पड़ोसी के साथ घृणा का पाठ पढ़ाया जाये। यह घृणा सिर्फ चीन पाकिस्तान तक ही नहीं। समाजिक स्तर पर उसे आरम्भ से ही बताया जाता है कि तूने किस बच्चे के साथ उठना बैठना नहीं क्योंकि वह हमारे से निम्न जाति का या समाजिक स्तर का है। हमारे गांवों का हाल इतना बुरा है कि आप अन्दाजा नहीं लगा सकते। वहां पर बच्चे को छोटे होते से ही यह बताया जाता है कि फलां व्यक्ति निम्न जाति का है, तुम ने स्कूल में उस के बच्चें के बात बात नहीं करनी। शहरों वाले पीछे नहीं। हम सब ने पढ़ा कि महाराष्टर के एक ग़ांव में एक दलित को 15 दिन लगातार अकेले ही खुदाई कर कूआं खोदना पड़ा क्योंकि उच्च जाति के लोग उसकी पत्नि को अपने कूंए से पानी नहीं लेने देते थे। ऐसे महोल में जब हमारे बच्चे बड़े होगे तो इंसान के तौर पर उन में कमी रहना स्वभाविक ही है। शहरों में भी यदि यह पूछा जाये कि आप अपने बच्चे को नजदीक के ही स्कूल में क्यों नहीं पढ़ाते तो जबाव मिलेगा वहां पर Crowd अच्छा नहीं होता। यानी कि निम्न परिवारों के बच्चे पढते है। यही नहीं अपने सगे रिश्तेदारीं और भाई बहनों के बारे में यही शिक्षा दी जाती है। यह बात हम अक्सर नहीं बतायेगें कि बड़े भाई ने हमें जरूरत के समय सहारा दिया हों यह अवश्य बतायेंगें कि हमें जायदाद में हिस्सा कम मिला।

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। **Book is in English**

कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। **Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

Book is also available at in English Book Depot Sector 17, Chandigarh

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,

GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

उपयुक्त जीवन साथी

एक युवा लड़की जो कि अपने लिये बहुत ही अच्छा जीवन साथी चाहती थी, एक बजुर्ग स्त्री से पूछा------मुझे अपने लिये अच्छा जीवन साथी देखते देखते 3 साल हो गये पर कोई उपयुक्त युवक जिसे मैं अपने योग्य पाउं नहीं मिला। मुझे क्या करना चाहिये?

बुजुर्ग युवती ने उसे देखा औा कुछ सोचने के बाद कहा----ऐसा करो, पास के फूलों के बाग में जाओ और जो फूल सब से खूबसूरत लगे उसे तोड़ कर ले आओ।

लड़की दूसरे दिन बापिस आई और बोली------मैं पूरा दिन सब से सुन्दर फूल की तलाश करती रही। पर किसी पर मन नहीं बैठ रहा था। आगे जाती रही और जब लगा कि पिछला फूल ही अच्छा था पर जब लौटकर उसे तोड़ने पहुंची तो उसे कोई और तोड़ कर ले गया था ।

तब बजुर्ग यूवती ने कहा----अपयुक्त की यही परिभाषा है। जो सामने होता है उसकी कदर नहीं करते और जब मन बैठता है तब तक देर हो चुकी होती है। इसलिये कुछ ठीक लगे तो पकड़ लो। पूरा संसार तो किसी को भी नहीं मिलता

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Editorial

RSS needs to ponder over why its Ganga has become so polluted

Leftists and Congress party may condemn RSS for its stance towards Muslims and pro right wing Hindu philosophy but one point on which there can't be any dispute is the public conduct of the old time RSS groomed politicians. Raised in the philosophy "yatr naryasto pojyantay, ramantay tatr devta . Where women are provided place of honour, gods feel pleased and reside in that household. They used to be politicians with difference due to their refined and cultured conduct as this experience of two Railway Traffic woman officers reveals.

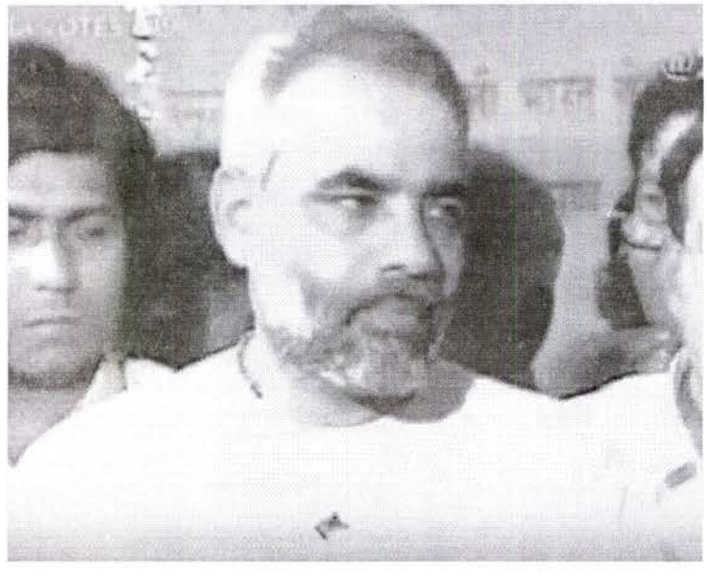

It was the summer of 1990. Two women officers were travelling by train from Lucknow to Delhi for onward journey to Ahemdabad. Two MPs of a regional outfit were also travelling in the same bogie. Though there was nothing wrong in their conduct, but the behaviour of some 12 people who were travelling with them without reservation was terrifying. They forced them to vacate our reserved berths and sit on the luggage, and passed obscene and abusive comments.Only thing those female officers could do was to cower in fright and squirm with rage.

They reached Delhi the next morning without any physical harm, but emotionally wrecked. After a brief halt at Delhi they boarded an overnight train to Gujarat's capital, this time without reservations as there wasn't enough time to arrange for them so they were wait-listed.They met the TTE of the first class bogie, and apprised him of their requirement. Since train was heavily booked, he led them to a coupe to help them out. Two politicians as could be discerned from their white khadi attire were seated there. It was enough to panick them in view of last night's experience. "They're decent people, regular travellers on this route, nothing to worry," the TTE assured them. One of them was in his mid-forties with a normal, affectionate face, and the other in his late-thirties with a warm but somewhat impervious expression. They readily made space for them by almost squeezing themselves to one corner. Then started the normal tete-a tete.

They introduced themselves: two BJP leaders from Gujarat. Female officers found the names inconsequential at that moment. They talked on different topics and it was 10 PM when the TTE came to inform that he couldn't arrange berths for them. Both men immediately stood up and said: "It's okay, we'll manage." They swiftly spread a cloth on the floor and went to sleep, while the female officers occupied the berths.

The next morning, when the train neared Ahmedabad, both of them asked female officer about their lodging arrangements in the city. The senior one told that in case of any problem, the doors of his house were open for them while the younger one remarked "I'm like a nomad, I don't have a proper home to invite you but you can accept his offer of safe shelter in this new place." When the time to depart neared, full of gratitude, one of the female officers pulled out my diary and asked them for their names again. Elder one was Shankersinh Vaghela and younger one Narendra Modi, our present Prime Minister.

After reading this I hope Barala may not like to continue as a state head of the party whose leaders had such an exemplary character. As parents we can't wash off our hands of the actions of our progenies, who generally are their successors. Without an iota of doubt Barala will like his son to take over his political legacy. RSS needs to ponder over-----why their Ganga has become so polluted. To me no body is more responsible than Shah who who paved way for all sort of dirty rivulets to find their way in to it to leave it in present state. Today BJP has more than 70%members who at one time or the other were its worst critics and those who gave birth to this Ganga have been sidelined.

*****

श्रेष्ठ जीवन

कोई मुझ से पूछे कि श्रेष्ठ जीवन क्या है तो मैं यही कहूंगा कि ऐसा जीवन जिस में हम अपने आप आनन्द में रहते हुये दूसरों के जीवन को भी सुधारने में लगे रहें। पहले हमें अपना जीवन अनुकरणिय बनाना है तभी हम दूसरों का जीवन सुधारने के हकदार है। ऐसा ही जीवन है माननिय जस्टिस श्री प्रीतम पाल, पूर्व लोकायुक्त हरियाणा का।

वे बच्चों के चरित्र निर्माण के लिये लगे रहते हैं। खास कर जो कि देहातों और गांवों में रहते है। बात उनकी ठीक है रोशनी वहां करो जहां कि रोशनी की सब से अधिक आवश्यकता हो। मुझे उनकी पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। उनके जीवन के कुछ पहलू जो छू जाते हैं वे हैं आपार सादगी, ईमानदारी, सोच समझकर पैसा खर्च करना जिसे अंग्रेजी में frugality कहते हैं, अपने उदेश्य की पूर्ती के लिये परिश्रम और सब से उपर संवेदनशीलता----दूसरों के सुख दुख में अपना सुख दुख देखना। ऐसे व्यक्तियों का परिवार भी उतना ही अच्छा होता है। जहां आय के साधन पवित्र होते हैं वहां सब चीज ठीक होती है।

श्री प्रीतम पाल जी चरित्र निर्माण शिविर महीने के पहले रविवार को आयोजित करते है। अभी हाल में श्री प्रीतम पाल जी ने 65वां चरित्र निर्माण शिविर और पुरस्कार वितरण समारोह कुरूक्षेत्र जिले में लाडवा इद्री मार्ग पर अपने द्वारा बनाई यज्ञशाला पर किया। इस बार इलाके के होनहार टापर बच्चों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। उनकी सपुत्री सोनिपत की एडिशनल सिविल जज , सिनियर डिविजन, डा सुखदा प्रीतम ने पुरस्कार दियें।

जस्टिस श्री प्रीतम पाल का बच्चों के नाम बहुत ही सुन्दर संदेश था---आलस्य व क्रोद्ध को तयागें ये सबसे बड़े दुश्मन है और तरक्की के वाधक है।

ईश्वर श्री प्रीतम पाल जी को बहुत लम्बी आयु व स्वस्थ जीवन दे। हमारे लिये यह बहुत गर्व का विषय है कि वह हमारे पहले पाठकों में से एक है।

नैतिकता व प्रेरणा के नाम पर ज़हर घोलते प्रेरक प्रसंग व बोधकथाएं

सीताराम गुप्ता

एक पत्रिका में एक लेख पढ़ रहा था। उसमें विश्वास की शक्ति पर एक कहानी भी दी हुई थी कि कैसे विश्वास करने वाला व्यक्ति मुसीबत से बच जाता है और विश्वास न करने वाला व्यक्ति मुसीबत में फंस जाता है। कहानी इस प्रकार से है :

एक गुरू ने अपने एक शिष्य को एक ऐसा चमत्कारी मंत्र सिखलाया जिसका उच्चारण करके पेड़ पर चढ़कर छलांग लगाने से व्यक्ति ज़मीन पर गिरने की बजाय उड़ने लगता है और फ़ौरन मनचाहे स्थान पर जा पहुंचता है। मंत्र सीखने के बाद शिष्य ने मंत्र की शक्ति का परीक्षण करने का विचार किया। वह जंगल में गया और मंत्र पढ़कर पेड़ पर चढ़ गया लेकिन जैसे ही वो छलांग लगाने की सोचता उसके मन में विचार आने लगता कि यदि मंत्र ने ठीक से काम नहीं किया तो छलांग लगाते ही वो पेड़ से नीचे गिरकर मर जाएगा या बुरी तरह से घायल हो जाएगा। वह मंत्र की शक्ति के प्रति शंकालू हो उठा। तभी एक चोर भागा–भागा वहां आ पहुंचा। उसे पकड़ने के लिए पुलिस उसके पीछे लगी हुई थी। चोर ने पेड़ पर चढ़े हुए शिष्य से पूछा कि वो वहां क्या कर रहा है? शिष्य ने गुरूजी द्वारा दिए गए चमत्कारी मंत्र की बात उसे बतलाई और ये भी बतलाया कि उसे डर है कि यदि मंत्र ने ठीक से काम नहीं किया तो वो छलांग लगाते ही पेड़ से नीचे गिरकर मर जाएगा या बुरी तरह से घायल हो जाएगा।

चोर ने सोचा कि यदि ये मंत्र उसे मिल जाए तो कितना अच्छा हो? यदि मंत्र ने काम नहीं किया और गिरकर मर गया तो कम से कम पुलिस के हाथों से तो बच जाऊंगा। पुलिस कौन सा मुझे जीने देगी? यह विचार मन में आते ही चोर ने शिष्य से कहा, " आप मुझे वह मंत्र सिखा दें। मैं मंत्र पढ़कर पेड़ से छलांग लगा देता हूं। यदि मैं सफल हो गया तो बाद में आप भी मंत्र पढ़कर छलांग लगाकर मनचाहे स्थान पर पहुंच जाना। षिश्य को ये बात जंच गई। उसने चोर को मंत्र सिखा दिया। चोर ने मंत्र पढ़कर जैसे ही छलांग लगाई वो अदृश्य हो गया और फ़ौरन मनचाही जगह जा पहुंचा। शिष्य पेड़ के नीचे खड़ा ये सब देख ही रहा था तभी पुलिस वहां आ पहुंची। पुलिस उसे ही चोर समझकर पकड़ ले गई और जेल में डाल दिया। यह है विश्वास का चमत्कार।

यह कहानी अथवा बोधकथा पढ़कर मुझे झटका लगा। मुझे लगा कि हमें ग़लत दिशा में ले जाया जा रहा है। मान लिया कि विश्वास के महत्त्व को समझाने के लिए ये एक प्रतीक कथा है लेकिन जब चमत्कारी शक्ति पर विश्वास करके एक अपराधी तो बच जाता है लेकिन एक निरपराध फंस जाता है तो कथा किसी भी प्रकार की शिक्षा अथवा सकारात्मक संदेश देने में सक्षम ही नहीं होती। यहां एक चोर को नायक बना दिया गया है जो किसी भी तरह से उचित नहीं है। किसी चमत्कारी शक्ति से चोर का बच निकलना पाठक के मन में विश्वास नहीं अंधविश्वास उत्पन्न करेगा। चमत्कारों अथवा आडंबरों को समझने के प्रति उपेक्षा व इन्हें न मानने की अवस्था में भय की सृष्टि करेगा। इस प्रकार के प्रसंग न केवल बुद्धि के विकास को अवरुद्ध कर देते हैं अपितु इस हद तक आतंकित कर देते हैं कि हम उन पर विश्वास करने को बाध्य हो जाते हैं।

आज इंटरनेट इस प्रकार के अनर्गल प्रसंगों से भरा पड़ा है। करोड़ों लोग तथाकथित ऐसे सत्संगों व प्रवचनों में जाते हैं जिनमें इस प्रकार की कथाओं की भरमार होती है। ऐसी कथाएं बार–बार सुनने का ही प्रभाव होता है जिनके कारण हम सुधरने की बजाय दंभी व पाखंडी हो जाते हैं। ऐसी कथाओं का औचित्य सिद्ध करने के लिए हम न केवल एड़ी चोटी का ज़ोर लगाने लगते हैं अपितु अपनी ग़लतियों व बेवकूफियों को छुपाने के लिए भी इसी प्रकार की कथाओं का सहारा लेने लगते हैं। शिष्य का संशय उसमें व्यावहारिक बुद्धि होने का प्रमाण है। उसे खलनायक बनाकर वैज्ञानिक दृश्टिकोण के विकास की संभावना ही समाप्त कर दी गई है। हमें इस प्रकार की कथा–कहानियों के सृजन व प्रचार–प्रसार पर पूरी तरह से रोक लगा देनी चाहिए जो सकारात्मक संतुलित व व्यावहारिक सोच एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में बाधक हो।

*****

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Anita Mahajan and alisha mahajan with Slum school Children

अन्य जिनसे दान आया

C. L. DHAMIJA

DR AJAY GUPTA

GIAN MUNI

KUNAL BHATIA

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

MANOHAR LAL SONI AND
OM PYARI SONI

MRS AND MR NAVNEET

MUKESH GUPTA

RUDRA DUTT RISHI

SAROJ BHARTI

SURINDER MOHAN SOOD

UMA TEJPAL
M/O SURBHI RAJPAL

VINOD BALA

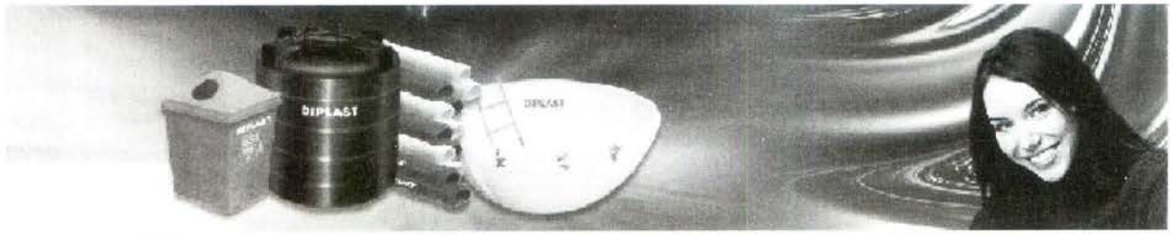

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in